IJIRSET

International Journal of Innovative Research in
SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

e-ISSN: 2319-8753 | p-ISSN: 2347-6710

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

Volume 13, Issue 1, January 2024

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 8.423

9940 572 462 6381 907 438 ijirset@gmail.com www.ijirset.com

|e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.423| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 13, Issue 1, January 2024 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2023.1301042 |

प्लेटो

Mahendra Kumar Singaria Regar

Department of Political Science, Acharya Shri Mahapragya Institute of Excellence, Asind, Bhilwara, India

सार: प्लेटो (यूनानी: Πλάτων, प्लातोन्; ४२८/४२७ या ४२४/४२३ ईसापूर्व - ३४८/३४७ ईसापूर्व), या अफ़्लातून (अरबी أفلاطون से व्यूत्पत्तित) , एथेन्स में जन्मा प्राचीन यूनान के श्रेण्य काल का प्रसिद्ध दार्शनिक था। एथेन्स मे ही उसने अकादमी (या अकादेमिया, Ἀκαδήμεια) नामक दार्शनिक विद्यापीठ की शुरुआत की जहाँ उसने उन दार्शनिक विचारों के समुच्च्य को पढ़ाया जिसे तत्पश्चात प्लेटोवाद के रूप में जाना जाने लगा। वह सुकरात का शिष्य तथा अरस्तू का गुरू था। इन तीन दार्शनिकों की त्रयी ने ही पश्चिमी संस्कृति का दार्शनिक आधार तैयार किया। प्लेटो एक कृतकनाम था, जो संभवतः उनके कुश्ती कोच द्वारा उन्हें दिये गए उपनाम से उत्पत्तित था - कथित तौर पर उनकी शारीरिक व्यापकता का संदर्भ में। सिनोप के डायोजनीज द्वारा उद्धृत मिलिटस के अलेक्जेंडर के अनुसार उनका वास्तविक नाम अरिस्तोक्लेस था,अर्थात् जो दीमोस कोलीटस (एथेंस का एक जिला) के अरिस्तोन का पुत्र था।[1]यूरोप में ध्वनियों के वर्गीकरण का श्रेय प्लेटो को ही है। [2]

प्लेटो दर्शनशास्त्र में लिखित संवाद और द्वंद्वात्मक रूपों के प्रवर्तक थे । उन्होंने उन समस्याओं को उठाया जो बाद में सैद्धांतिक दर्शन और व्यावहारिक दर्शन दोनों के सभी प्रमुख क्षेत्र बन गए । उनका सबसे प्रसिद्ध योगदान प्रत्ययों का सिद्धांत है , जिसकी व्याख्या उस समस्या के समाधान को आगे बढ़ाने के रूप में की गई है जिसे अब सामान्यों की समस्या के रूप में जाना जाता है। उनका नाम प्लेटोनीय प्रेम और प्लेटोनीय ठोस की भी नामराशि है ।

I. परिचय

आमतौर पर माना जाता है कि उनके अपने स्वयं के सबसे निर्णायक दार्शनिक प्रभाव सुकरात के साथ-साथ पूर्व-सुकरातिक पाइथागोरस, हेराक्लिटस और पारमेनिदीज़ के भी थे , हालांकि उनके पूर्ववर्तियों के कुछ काम अभी भी मौजूद हैं और आज हम इन लोगों के बारे में जो कुछ भी जानते हैं वह प्लेटो से प्राप्त होता है। [a]

अपने शिक्षक, सुकरात और अपने छात्र, अरस्तू के साथ, प्लेटो दर्शन के इतिहास में एक केंद्रीय व्यक्ति हैं ।[b] अपने लगभग सभी समकालीनों के कार्यों के विपरीत, माना जाता है कि प्लेटो का संपूर्ण कार्य 2,400 वर्षों से अधिक समय तक बरकरार रहा है।[6] यद्यपि उनकी लोकप्रियता में उतार-चढ़ाव आया है, प्लेटो के कार्यों को लगातार पढ़ा और अध्ययन किया गया है। नवप्लेटोवाद के माध्यम से प्लेटो ने ईसाई और इस्लामी दर्शन (उदाहरण के लिए अल-फ़राबी के माध्यम से) दोनों को बहुत प्रभावित किया।[7] आधुनिक समय में, अल्फ्रेड नॉर्थ व्हाइटहेड ने प्रसिद्ध रूप से कहा कि: "यूरोपीय दार्शनिक परंपरा का सबसे विश्वसनीय सामान्य चरित्रांकन यह है कि इसमें प्लेटो की ओर पादटीकाओं की एक श्रृंखला है।" [8]

जीवनी[1,2,3]

प्लेटो का जन्म एथेंस के समीपवर्ती ईजिना नामक द्वीप में हुआ था। उसका परिवार सामन्त वर्ग से था। उसके पिता 'अरिस्टोन' तथा माता 'पेरिक्टोन' इतिहास प्रसिद्ध कुलीन नागरिक थे। 404 ई. पू. में प्लेटो सुकरात का शिष्य बना तथा सुकरात के जीवन के अंतिम क्षणों तक उनका शिष्य बना रहा। सुकरात की मृत्यु के बाद प्रजातंत्र के प्रति प्लेटो को घृणा हो गई। उसने मेगोरा, मिस्र, साएरीन, इटली और सिसली आदि देशों की यात्रा

|e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.423| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |
|| Volume 13, Issue 1, January 2024 ||
| DOI:10.15680/IJIRSET.2023.1301042 |

की तथा अन्त में एथेन्स लौट कर अकादमी की स्थापना की। प्लेटो इस अकादमी का अन्त तक प्रधान आचार्य बना रहा।

[1] सुव्यवस्थित धर्म की स्थापना पाश्चात्य जगत में सर्वप्रथम सुव्यवस्थित धर्म को जन्म देने वाला प्लेटो ही है। प्लेटो ने अपने पूर्ववर्ती सभी दार्शनिकों के विचार का अध्ययन कर सभी में से उत्तम विचारों का पर्याप्त संचय किया, उदाहरणार्थ- 'माइलेशियन का द्रव्य', 'पाइथागोरस का स्वरूप', 'हेरेक्लाइटस का परिणाम', 'पार्मेनाइडीज का परम सत्य', 'जेनो का द्वन्द्वात्मक तर्क' तथा 'सुकरात के प्रत्ययवाद' आदि उसके दर्शन के प्रमुख स्रोत थे। प्लेटो का मत

प्लेटो के समय में कवि को समाज में आदरणीय स्थान प्राप्त था। उसके समय में कवि को उपदेशक, मार्गदर्शक तथा संस्कृति का रक्षक माना जाता था। प्लेटो के शिष्य का नाम अरस्तू था। प्लेटो का जीवनकाल 427 ई.पू. से 347 ई.पू. माना जाता है। उसका मत था कि "कविता जगत की अनुकृति है, जगत स्वयं अनुकृति है; अतः कविता सत्य से दोगुनी दूर है। वह भावों को उद्वेलित कर व्यक्ति को कुमार्गगामी बनाती है। अत: कविता अनुपयोगी है एवं कवि का महत्त्व एक मोची से भी कम है।" रचनाएँ
प्लेटो की प्रमुख कृतियों में उसके संवाद का नाम विशेष उल्लेखनीय है। प्लेटो ने 35 संवादों की रचना की है। उसके संवादों को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है-

- सुकरातकालीन संवाद - इसमें सुकरात की मृत्यु से लेकर मेगारा पहुंचने तक की रचनाएं हैं। इनमें प्रमुख हैं- हिप्पीयस माइनर, ऐपोलॉजी, क्रीटो, प्रोटागोरस आदि।
- यात्रीकालीन संवाद - इन संवादों पर सुकरात के साथ-साथ 'इलियाई मत' का भी कुछ प्रभाव है। इस काल के संवाद हैं- क्लाइसिस, क्रेटिलस, जॉजियस इत्यादि।
- प्रौढ़कालीन संवाद - इस काल के संवादों में विज्ञानवाद की स्थापना मुख्य विषय है। इस काल के संवाद हैं- सिम्पोजियम, फिलेबुरस, ट्रिमेर्यास, रिपब्लिक और फीडो आदि।[1]

प्लेटो की रचनाओं में 'द रिपब्लिक', 'द स्टैट्समैन', 'द लाग', 'इयोन', 'सिम्पोजियम' आदि प्रमुख हैं।
काव्य के महत्त्व की स्वीकार्यता
प्लेटो काव्य के महत्व को उसी सीमा तक स्वीकार करता है, जहां तक वह गणराज्य के नागरिकों में सत्य, सदाचार की भावना को प्रतिष्ठित करने में सहायक हो। प्लेटो के अनुसार "मानव के व्यक्तित्व के तीन आंतरिक तत्त्व होते हैं-
- बौद्धिक
- ऊर्जस्वी
- सतृष्ण

काव्य विरोधी होने के बावजूद प्लेटो ने वीर पुरुषों के गुणों को उभारकर प्रस्तुत किए जाने वाले तथा देवताओं के स्तोत्र वाले काव्य को महत्त्वपूर्ण एवं उचित माना है। प्लेटो के काव्य विचार
साँचा:Stub साँचा:Infobox philosopher प्लेटो (४२८/४२७ ईसापूर्व - ३४८/३४७ ईसापूर्व), या अफ़लातून, यूनान केरौ प्रसिद्ध दार्शनिक छेलै। वू सुकरात (Socrates) केरौ शिष्य तथा अरस्तू (Aristotle) केरौ गुरू रहै। ई तीन दार्शनिको के त्रयी नँ ही पश्चिमी संस्कृति के दार्शनिक आधार क तैयार करलकै। यूरोप मँ ध्वनियो के वर्गीकरण के श्रेय प्लेटो क ही छै। [१]

प्लेटो (/ pleɪtoʊ/ PLAY-toe;[2] ग्रीक: Platōn; 428/427 या 424/423 - 348/347 ईसा पूर्व) प्राचीन ग्रीस

|e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.423| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 13, Issue 1, January 2024 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2023.1301042 |

में शास्त्रीय काल के दौरान एथेंस में पैदा हुए एक यूनानी दार्शनिक थे। उन्होंने प्लेटोनिस्ट स्कूल ऑफ थिंक और अकादमी की स्थापना की, जो यूरोपीय महाद्वीप पर उच्च शिक्षा की पहली संस्था थी।[4,5,6]

अपने शिक्षक, सुकरात और अपने छात्र, अरस्तू के साथ, प्लेटो प्राचीन यूनानी दर्शन के इतिहास में एक केंद्रीय व्यक्ति है और पश्चिमी और मध्य पूर्वी दर्शन इससे उतरे हैं। [ए] उन्होंने धर्म और आध्यात्मिकता को भी आकार दिया है। [5] उनके दुभाषिया प्लोटिनस के तथाकथित नियोप्लाटोनिज़्म ने ईसाई धर्म (चर्च फादर्स जैसे ऑगस्टीन के माध्यम से) और इस्लामी दर्शन (जैसे अल-फ़राबी के माध्यम से) दोनों को बहुत प्रभावित किया। आधुनिक समय में, फ्रेडरिक नीत्शे ने पश्चिमी संस्कृति को प्लेटो की छाया में बढ़ने के रूप में निदान किया (प्रसिद्ध ईसाई धर्म को "जनता के लिए प्लेटोनिज्म" कहा जाता है), जबकि अल्फ्रेड नॉर्थ व्हाइटहेड ने कहा: "यूरोपीय दार्शनिक परंपरा का सबसे सुरक्षित सामान्य लक्षण वर्णन यह है कि इसमें एक शामिल है प्लेटो के लिए फुटनोट की श्रृंखला।"[6]

प्लेटो दर्शन में लिखित संवाद और द्वंद्वात्मक रूपों के प्रवर्तक थे। उन्होंने उन समस्याओं को उठाया जो बाद में सैद्धांतिक दर्शन और व्यावहारिक दर्शन दोनों के सभी प्रमुख क्षेत्र बन गए। उनका सबसे प्रसिद्ध योगदान शुद्ध कारण से ज्ञात रूपों का सिद्धांत है, जिसमें प्लेटो सार्वभौमिकों की समस्या का समाधान प्रस्तुत करता है, जिसे प्लेटोनिज्म के रूप में जाना जाता है (जिसे अस्पष्ट रूप से प्लेटोनिक यथार्थवाद या प्लेटोनिक आदर्शवाद भी कहा जाता है)। वह प्लेटोनिक प्रेम और प्लेटोनिक ठोस का भी नाम है।

उनके अपने सबसे निर्णायक दार्शनिक प्रभाव आमतौर पर सुकरात, पूर्व-सुकराती पाइथागोरस, हेराक्लिटस और परमेनाइड्स के साथ रहे हैं, हालांकि उनके कुछ पूर्ववर्तियों के काम मौजूद हैं और आज हम इन आंकड़ों के बारे में जो कुछ भी जानते हैं, वह खुद प्लेटो से प्राप्त होता है। [बी] अपने लगभग सभी समकालीन लोगों के काम के विपरीत, प्लेटो के काम के पूरे शरीर को 2,400 से अधिक वर्षों तक बरकरार रखा गया है। [8] हालांकि उनकी लोकप्रियता में उतार-चढ़ाव आया है, प्लेटो के कार्यों को लगातार पढ़ा और अध्ययन किया गया है। [8]

II. विचार-विमर्श

प्लेटो यूनान के महान दार्शनिक सुकरात के शिष्य थे और अरस्तु के गुरु थे। सम्राट सिकंदर अरस्तु का शिष्य था। प्लेटो का जन्म करीब 428 ईसा पूर्व हुआ था। इन्हें अफलातून के नाम से भी जाना जाता है। सुकरात की मृत्यु के बाद प्लेटो ने समाज को सुधारने के लिए कई देशों की यात्रा की और यूनान के एथेंस में एक अकादमी की शुरुआत की। इनकी मृत्यु 347 ईसा पूर्व हुई थी।

प्लेटो के विचारों को अपनाने से हम कई परेशानियों से बच सकते हैं। जानिए प्लेटो के कुछ खास विचार...[7,8]

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology (IJIRSET)

|e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.423| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 13, Issue 1, January 2024 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2023.1301042 |

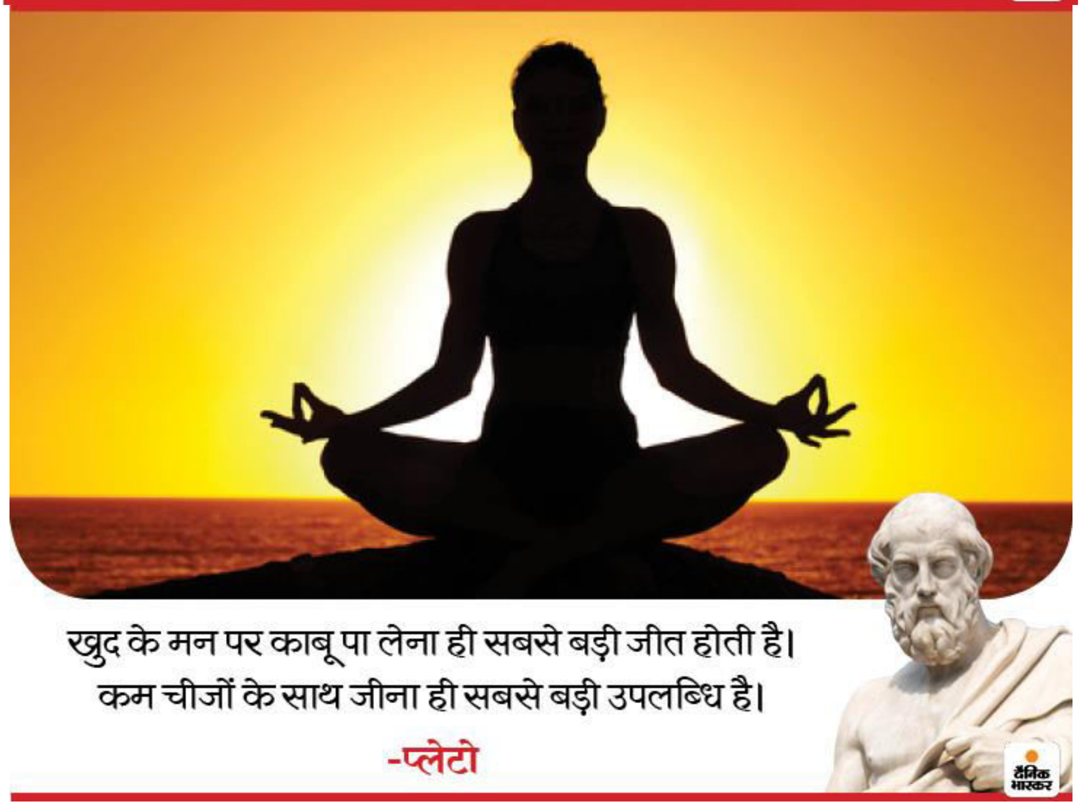

|e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.423| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 13, Issue 1, January 2024 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2023.1301042 |

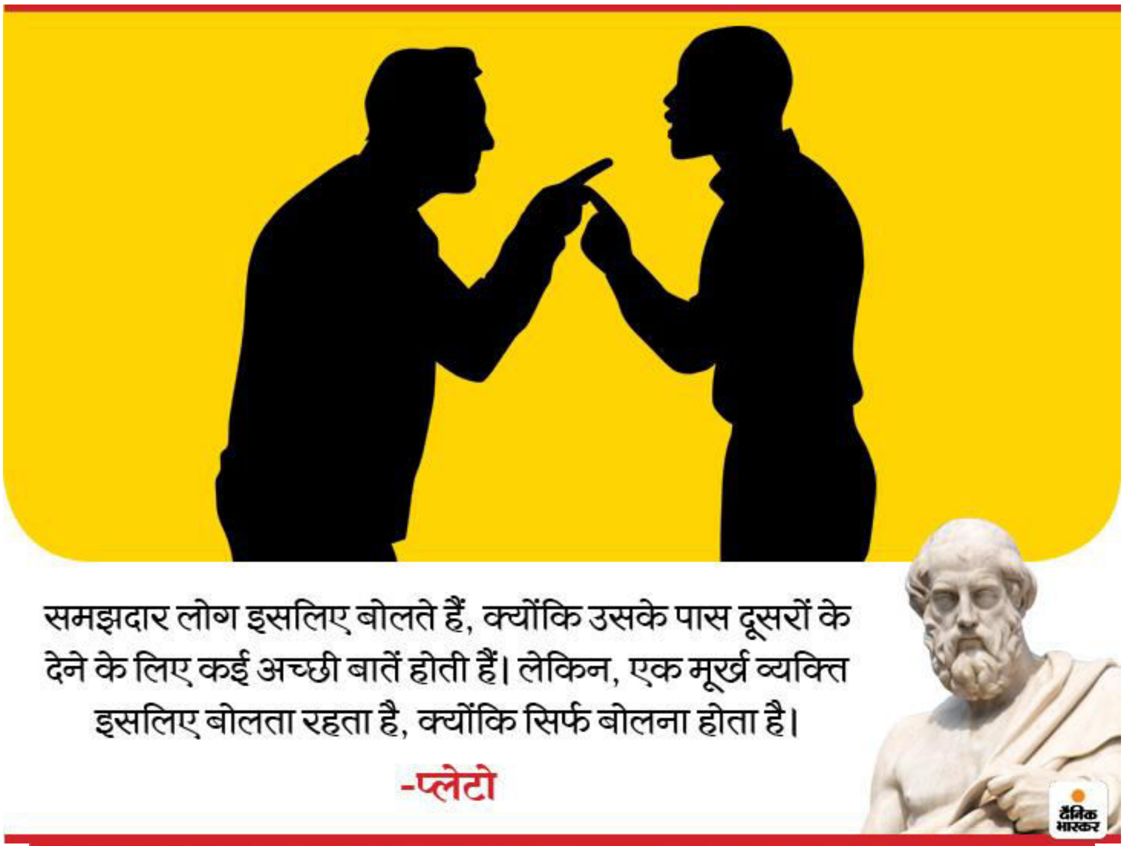

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology (IJIRSET)

|e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.423| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 13, Issue 1, January 2024 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2023.1301042 |

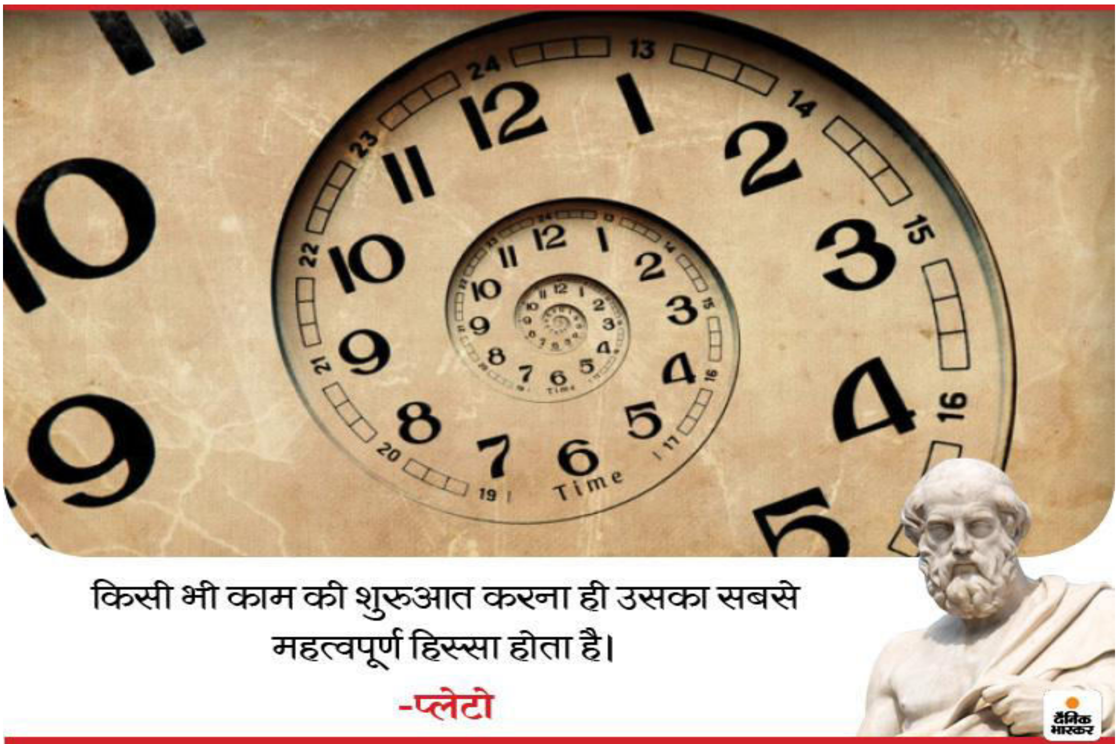

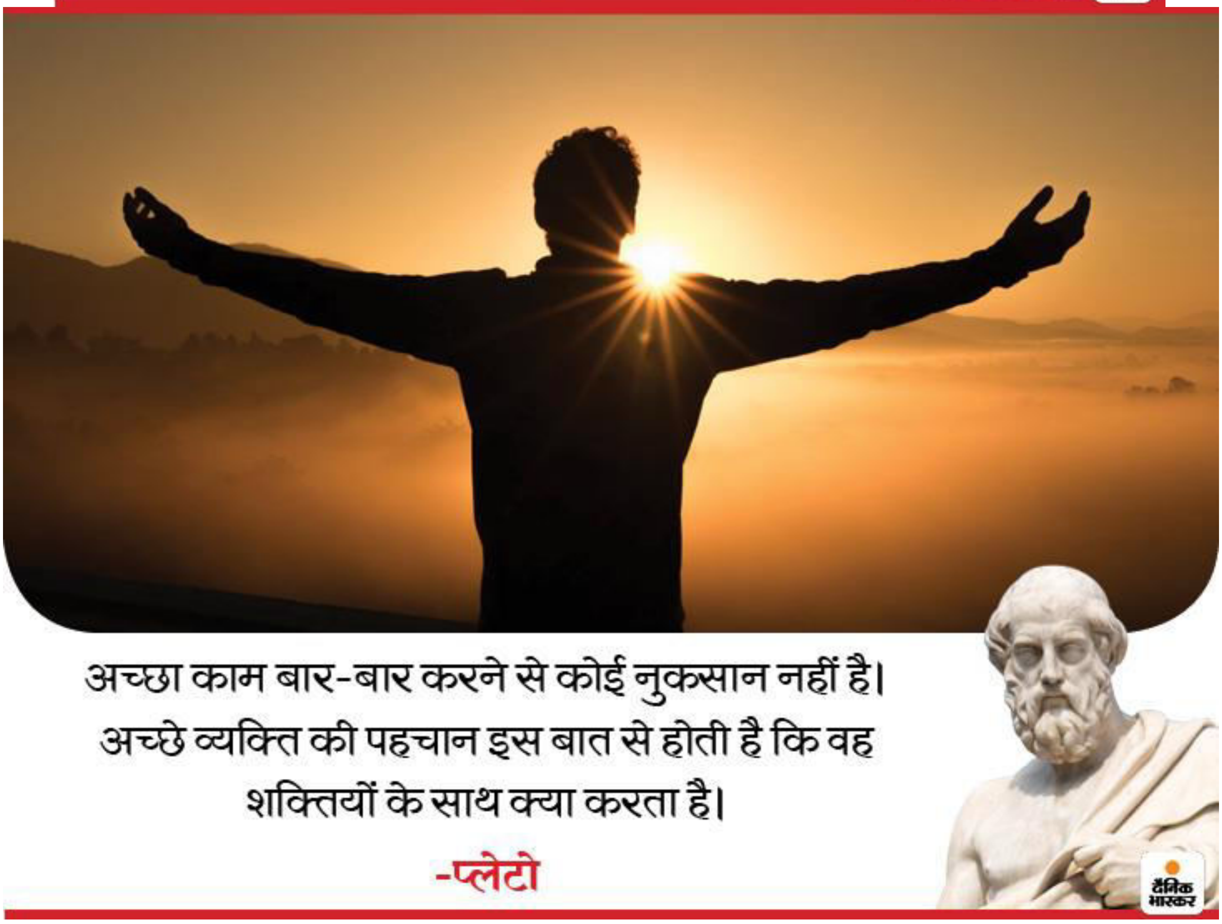

|e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.423| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 13, Issue 1, January 2024 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2023.1301042 |

III. परिणाम

प्लेटोनिक समाज में हरेक की भूमिका होती है, ग़ुलामों से लेकर आज़ाद लोगों तक, लेकिन समाज के चलने के लिए इसके ढांचे में वर्गीकरण होना चाहिए और हर चीज़ के ऊपर एक नेता होगा.

प्लेटो (418 ईसा पूर्व से 347 ईसा पूर्व), ग्रीक दार्शनिक और पश्चिमी दर्शन में सबसे रचनात्मक और प्रभावी विचारकों में से एक थे. उन्हें उनके राजनीतिक और नैतिक लेखों और लोकतांत्रिक संस्थानों के कट्टर आलोचक के तौर जाना जाता है.

प्लेटों के मुताबिक, आदर्श राज्य तीन वर्गों से मिलकर बना होता है. आर्थिक ढांचा व्यापारी वर्ग पर निर्भर करता है. सुरक्षा सैनिकों के कंधों पर होती है. और राजनीतिक नेतृत्व दार्शनिक राजाओं को ग्रहण करना चाहिए.[6,7,8]

राजा ही बाकी लोगों के दिमागों को इतना तैयार करता है कि बाकी दूसरे वर्ग के लोग विचारों को समझने में सक्षम होते हैं और इसलिए जनता से उलट समझदारी भरा निर्णय लेते हैं. नॉर्थवेस्टर्न यूनिवर्सिटी में क्लासिकल थॉट्स की प्रोफ़ेसर सारा मोनोसोन के अनुसार, “प्लेटो के विचार से उनमें तार्किक क्षमता होती है और उनके पास दुनिया में घटित होने वाली मुश्किल चीजों से निपटने का बहुत सारा अनुभव और ट्रेनिंग होती है. ये राजनीतिक सत्ता के सबसे मूल्यवान लोग हैं.” प्लेटो के नज़रिए से, दार्शनिक राजा अपने लिए सत्ता नहीं चाहता है, ऐसे लोग ईमानदार और गंभीर होते हैं, इसीलिए वे भ्रष्टाचार से आकर्षित नहीं होते हैं और सबसे भरोसेमंद सत्ता प्रतिष्ठान बन जाते हैं.

एथेंस को ही लीजिए, डेमोक्रेसी (लोकतंत्र) का उद्गम (डेमोस- लोग, क्रेटीन- शासन) निर्विवाद नहीं था, लेकिन मोनोसोन का कहना है कि प्लेटो ख़ासकर सूचना-विहीन जनता के ख़तरे को लेकर चिंतित थे.
वो कहती हैं, “प्लेटो के लिए, बिना दार्शनिक शिक्षा के, नागरिकों के इस्तेमाल किए जाने और चालाक नेता द्वारा बहकाए जाने का ख़तरा होता है.”

“ये ख़तरा इतना बड़ा होता है कि प्लेटो ने सोचा कि जनता से ही तानाशाह उभरते हैं. वो ऐसा व्यक्ति होता है जो बाकी लोगों को भरोसा दिलाता है कि वही सारी समस्याओं का हल है, लेकिन इससे भी आगे, जब वो सत्ता में जम जाता है तो खुद अत्याचारी बन जाता है.”
मोनोसोन कहती हैं कि इस संदर्भ में प्लेटो लोकतंत्र के आलोचक हो गए क्योंकि उन्होंने सोचा कि यह एक ऐसा सिस्टम है जो लोगों की सुरक्षा नहीं कर सकता.

नावारा यूनिवर्सिटी में दर्शन विभाग के प्रोफ़ेसर मिकेल प्रो. सोलांसब्लास्को का कहना है, “इसलिए प्लेटो के अनुसार, इन ख़तरों से बचने और एक शांतिप्रिय समाज बनाने के लिए दो चीज़ें ज़रूरी हैं.”

“पहला, अच्छी शिक्षा और दूसरा, अच्छा शासन.”
प्लेटो के अनुसार, किसी व्यक्ति की सामाजिक हैसियत शिक्षा से तय होती है, जोकि बचपन से शुरू होती है और तब तक चलती है जबतक व्यक्ति अपनी रुचियों और क्षमताओं के अनुरूप उच्च डिग्री या शिक्षा ग्रहण नहीं कर लेता.

|e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.423| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 13, Issue 1, January 2024 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2023.1301042 |

जिन्होंने पूरी शिक्षा ग्रहण की है, वे है पदसोपान के शीर्ष पर पहुंचते हैं और प्लेटो के मुताबिक, समाज को यही चाहिए भी.

प्रो. सोलांस कहते हैं, "मैं मानता हूं कि अच्छी शिक्षा से उनका मतलब था एक मानवीय शिक्षा. यानी छात्रों और बहुत कम उम्र में ही नागरिकों में सोचने की क्षमता को वो बढ़ावा देना चाहते हैं और शिक्षा को किसी साधन के रूप में नहीं बल्कि ज्ञान के संदर्भ में देखना चाहते हैं. ज्ञान का एक सामाजिक मूल्य होता है जोकि आलोचनात्मक क्षमता पर आधारित होता है."

वो कहते हैं, "प्लेटो के विचार से, संवेदनशीलता विकसित करना बहुत अहम है. एक नैतिक रूप से संवेदनशीलता, जोकि नागरिकों में अच्छे गुण पैदा करता है, महत्वाकांक्षी बनाता है और उनमें एक सामाजिक आचरण विकसित करता है. इस तरह यह नागरिकों में, अपनी संपत्ति या अपने लाभ से ऊपर उठकर समाज में रहने की इच्छा पैदा करता है."
मोनोसोन कहते हैं, "इन सारे गुणों के अभ्यास क्या नतीजे देंगे? इसका उत्तर है इंसानी ज़हन और राजनीतिक संस्थाओं, दोनों में, अपने खुद के लिए सत्ता का संयम पैदा करना."

अधिकांश दार्शनिकों का काम, उच्च और एकीकृत इच्छाओं को विकसत करने की ज़रूरत के इर्द गिर्द होता है, जो लोगों को दूसरों के साथ सहअस्तित्व और इंसाफ़ की साझा खोज करन के काबिल बनाता है.

इन सभी को हासिल करने के लिए प्लेटो असली ज़िंदगी में इसे करने के तरीक़े सुझाते हैं. इनमें से एक है, बुज़ुर्ग लोगों के साथ रहना और अधिक परिपक्व लोगों का सम्मान करना.
प्लेटो ऐसी व्यावहारिक शिक्षा के बारे में भी बात करते हैं जो कला, संगीत और नृत्य को निखारे. इस तरह के विषयों का पुरातन ग्रीस में बहुत महत्व होता था.

387 ईसा पूर्व प्लेटो ने एथेंस में एक एकेडमी की स्थापना की, जिसे पहली यूरोपीय यूनिवर्सिटी भी माना जाता है.[2,3,4]

इसका पाठ्यक्रम बहुत विस्तृत था जिसमें खगोलशास्त्र, जीव विज्ञान, गणित, राजनीतिक सिद्धांत और दर्शन शामिल था. अरस्तू उनके सबसे प्रतिभावान छात्र थे.

असल में, प्लेटो की आदर्श शिक्षा प्रणाली सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, दार्शनिक राजा तैयार करने के लिए बनाई गई थी.
सफल समाज के लिए दूसरी सबसे अहम चीज़ है, अच्छे शासक.

इस बार में प्लेटो ने अपनी प्रसिद्ध किताब 'रिपब्लिक' में चर्चा की है.

प्रो. सोलांसकहते हैं, "सफल होने के लिए, समाज में अच्छे नेता होने चाहिए, जो विचार विमर्श करने, सामान्य भलाई चाहने, एकीकृत परियोजनाओं की तलाश करने और समाज में उठते मतभेदों से निपटने में सक्षम हों."[5,6,7]

सरकार का नेतृत्व कर रहे लोगों में ऐसे प्रस्तावों लाने और ऐसा राजनीतिक माहौल बनाने की क्षमता होनी चाहिए, जिसे नागरिकों की बड़ी संख्या माने.

|e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.423| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 13, Issue 1, January 2024 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2023.1301042 |

प्लेटो बहुत मूल्यवान राजनीतिक आदर्शों की बात करते हैं, जिनका संबंध पसी संवाद की क्षमता और शासकों के नैतिक गुणों से है.

अपने सार्वजनिक भाषणों में जनता को संतुष्ट करना होगा. उन्हें कारण बताने होंगे, नागरिकों से सवाल करने होंगे और उनके जवाब सुनने का धैर्य रखना होगा.

"एक अच्छे शासक की पहचान है कि वो स्वतंत्र चर्चाओं का माहौल बनाए जिसमें आलोचना और आपसी समझादारी बढ़ने का मौका मिल सके."

प्लेटो के अनुसार, राजनीतिक गतिविधि केवल नैतिकता के दायरे में ही हो सकती है.

मोनोसोन के अनुसार, "एक आदर्श समाज में एक ऐसी शिक्षा प्रक्रिया होनी चाहिए जो दार्शनिक गुणों वाले इंसानों को पैदा कर सके जो उन्हें और भरोसेमंद बनाएंगे."
प्रो. सोलांसके मुताबिक, आज शिक्षा संकट में है.

वो कहते हैं, "ऐसा लगता है कि हमारे लिए शिक्षा का मतलब है, खुद को बाज़ार की ज़रूरतों के हिसाब से तैयार करना. और मुझे लगता है कि प्लेटो निश्चित रूप से ऐसी शिक्षा को नकार देते. शिक्षा हमें एक असली इंसान और सभ्य बनाने के लिए होनी चाहिए."

प्रो. सोलांसके अनुसार, प्लेटो इस विचार से सहमत होते कि शिक्षा कोई साधन नहीं है.

"शिक्षा का उद्देश्य अधिक व्यापक, अधिक एकीकृत लक्ष्य होना चाहिए जो संवेदनशीलता, तार्किकता और सह अस्तित्व को विकसित करने की इंसानी ज़रूरत को पूरा कर सके."

और एक अच्छे शासक के लिए संवाद का माहौल बनाने की ज़रूरत के बारे में प्लेटो क्या कहते हैं?[8]

IV. निष्कर्ष

प्रो. सोलांस कहते हैं, "कई बार ये कहा जाता है कि इंसाफ़ और सबकी भलाई की जानी चाहिए, लेकिन जब सबकी भलाई के लिए बताए गए बेहतर और पारदर्शी विचारों की रक्षा के लिए विपक्षियों पर हमला हमला किया जाता है, उनकी ग़लत छवि गढ़ी जाती है, उनकी वैध बातों को भी नहीं सुना जाता और उनकी आवाज़ को दबाया जाता है."

प्रो. सोलांस कहते हैं कि हम सभी एक 'पारदर्शी' दुनिया बनाना चाहते हैं, लेकिन इस पारदर्शिता का मतलब हमारे विशेष विचारों के अनुरूप होना चाहिए.

सोलांस के विचार से, "हालांकि प्लेटो खुद मानते थे कि उनके आदर्शों को कभी भी समझा नहीं जा सकेगा, लेकिन धीरे धीरे एक परफ़ेक्ट समाज की ओर हम जा सकते हैं, ये जानते हुए भी कि हम इसे कभी भी पूरी तरह नहीं हासिल कर सकते, क्योंकि हम खुद अपूर्ण प्राणी हैं."[8]

|e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.423| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 13, Issue 1, January 2024 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2023.1301042 |

संदर्भ

1. "Plato FAQ: Plato's real name". www.plato-dialogues.org.
2. ↑ भाषा विज्ञान, डा० भोलानाथ तिवारी, किताब महल, दिल्ली, पन्द्रहवाँ संस्करण- १९८१, पृष्ठ ४८१
3. ↑ Brickhouse & Smith.
4. ↑ Kraut 2013
5. ↑ "Plato and Aristotle: How Do They Differ?". Britannica। "Plato (c. 428–c. 348 BCE) and Aristotle (384–322 BCE) are generally regarded as the two greatest figures of Western philosophy".
6. ↑ Cooper, John M.; Hutchinson, D.S., eds. (1997): "Introduction."
7. ↑ Cooper 1997, पृ° vii.
8. ↑ Whitehead 1978, पृ° 39.

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

INNO SPACE
SJIF Scientific Journal Impact Factor

doi crossref

निस्केयर NISCAIR

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

9940 572 462 6381 907 438 ijirset@gmail.com

Scan to save the contact details